

डॉ. अल फुहर, एक्लेसिएस्टेस, सत्र 3

© 2024 अल फुहर और टेड हिल्डेब्रांट

हेवेल अवधारणा के साथ अधिकांश लोगों की परिचितता से परे, घमंड की व्यर्थता, उपदेशक ने कहा, एक ऐसा शब्द जिससे हम एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में बहुत परिचित हैं, एक और स्टॉक वाक्यांश जिसे हम एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के साथ विशिष्ट रूप से जोड़ते हैं सूर्य के नीचे है। हिब्रू में, यह ताहत हा-शेमेश होगा। यह एक ऐसे परिप्रेक्ष्य का विचार होगा जिसके द्वारा हमारा कोहेलेट, हमारा सोलोमोनिक व्यक्ति, एक्लेसिएस्टेस का हमारा बुद्धिमान ऋषि, हेवेल की दुविधा का समाधान, इस यिट्रोन को खोजने की अपनी खोज में लगा हुआ है।

अब, लोकप्रिय शिक्षण और उपदेशों में अंडर द सन वाक्यांशविज्ञान के साथ इस विचार को जोड़ना बहुत आम है कि सोलोमन या कोहेलेट का दृष्टिकोण किसी तरह से पीछे हट गया या अधर्मी या मानवतावादी था, शायद सुखवादी भी। ऐसे बहुत से लोग हैं जो सूर्य के नीचे के परिप्रेक्ष्य को मनुष्य के दृष्टिकोण के रूप में जोड़ेंगे, न कि स्वर्ग के नीचे के परिप्रेक्ष्य या स्वर्ग के नीचे के परिप्रेक्ष्य को ईश्वर के परिप्रेक्ष्य के रूप में। मैं आपको सुझाव दूंगा कि सूर्य के नीचे का परिप्रेक्ष्य जिसके द्वारा कोहेलेट अपनी यात्रा करता है, यिट्रोन को खोजने की उसकी खोज, इस ग्रह पर जीवन जीने से आने वाले परिप्रेक्ष्य से ज्यादा कुछ नहीं है।

हेवेल दुनिया में, जरूरी नहीं कि जीवन को स्वर्ग से नीचे की ओर लंबवत रूप से देखा जाए, बल्कि जीवन को क्षैतिज दृष्टिकोण से देखा जाए। कोई भटका हुआ परिप्रेक्ष्य नहीं, निश्चित रूप से कोई मूर्खतापूर्ण परिप्रेक्ष्य नहीं। वास्तव में, इस व्याख्यान में हम जो चीजें देखेंगे उनमें से एक यह है कि कोहेलेट अपनी यात्रा ज्ञान के लेंस के माध्यम से करता है।

वह जीवन को देखता और अनुभव करता है और वह उसे ज्ञान के माध्यम से फ़िल्टर करता है। यह मानवतावादी प्रकार का ज्ञान नहीं है, यह ईश्वर-केंद्रित ज्ञान है, लेकिन यह इस अर्थ में दैवीय रूप से प्रेरित नहीं है कि यह रहस्योद्घाटन नहीं है। अब फिर, इसका मतलब यह नहीं है कि एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक प्रेरित नहीं है, लेकिन जिस परिप्रेक्ष्य से कोहेलेट अपनी यात्रा शुरू करता है वह बिल्कुल क्षैतिज है।

वह जीवन को एक सीमित दृष्टिकोण से, मनुष्य के दृष्टिकोण से देख रहा है। वह जीवन को अपनी क्षमता के अनुसार हर उस चीज़ के साथ देख रहा है जिसके द्वारा वह ज्ञान को लागू करने और इसे समझने में सक्षम हो सकता है। अब सूर्य के नीचे वाक्यांश को देखते हुए, हम इसे एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में 29 बार दोहराया हुआ देखते हैं।

फिर से, विभिन्न संदर्भों में और अन्य रूपांकनों के साथ जुड़ाव के साथ। हालाँकि, जैसा कि मैंने सुझाव दिया है, उनमें से एक यह है कि एक साथी या कम से कम एक वैकल्पिक वाक्यांश है जिसे आप एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में समय-समय पर आते देखेंगे और वह है ताहत हा-शेमायिम। और वह "स्वर्ग के नीचे" परिप्रेक्ष्य है, जो मैं आपको सुझाऊंगा वह एक साहित्यिक विकल्प से ज्यादा कुछ नहीं है।

आकाश के नीचे और सूर्य के नीचे के परिप्रेक्ष्य के बीच कोई धार्मिक विभाजन नहीं है। वास्तव में, हम इनमें से कुछ स्वर्ग के परिप्रेक्ष्य या वाक्यांशों का शीघ्रता से सर्वेक्षण कर सकते हैं जो हमें सभोपदेशक में मिलते हैं। कम से कम जब हम मूल भाव का पता लगाते हैं तो एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में सूर्य के नीचे के वाक्यांशों में से प्रत्येक को देखना थोड़ा अधिक होगा।

किसी भी स्थिति में, यदि आपके पास इस वीडियो को देखते समय आपके पास बाइबिल है तो उसे खोलें और मेरे साथ अध्याय 1 और पद 13 पर एक नज़र डालें। हम स्वर्ग या पृथ्वी के नीचे क्या किया जाता है, इसके पहले उदाहरणों में से एक देखेंगे। स्वर्ग वाक्यांश के तहत. वस्तुतः, हम इसे आत्मकथात्मक परिचय के भाग में देखते हैं।

मैं, कोहेलेट, यरूशलेम में इस्राएल पर राजा था। मैंने स्वयं को अध्ययन करने और स्वर्ग के नीचे जो कुछ भी किया जाता है, उसका बुद्धि द्वारा पता लगाने के लिए समर्पित कर दिया। अब फिर, यह इस समय कोहेलेट की बात नहीं है कि वह आकाश से ऊपर से नीचे तक चीजों को लंबवत रूप से देख रहा है और एक प्रकार का रहस्योद्घाटन दृष्टिकोण रखता है जो शायद भविष्यवक्ता अपने साथ लाए होंगे।

वह बस एक बुद्धिमान ऋषि के रूप में जीवन का अवलोकन कर रहा है। हम सुझाव देंगे कि एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में, हम प्रेरित साहित्य के साथ काम कर रहे हैं, लेकिन यहां कोहेलेट केवल उन लेंसों के माध्यम से ज्ञान को लागू कर रहा है जो उसके पास इस पतित दुनिया में जीवन का निरीक्षण करने के लिए उपलब्ध थे। हम अध्याय 3 और श्लोक 1 में भी इसी तरह की पदावली देख सकते हैं। समय पर कविता का परिचय देते हुए, प्रस्तावना में कहा गया है, स्वर्ग के नीचे हर चीज का एक समय और हर गतिविधि का एक मौसम होता है।

अब कुछ लोग सुझाव दे सकते हैं, तो फिर जो कुछ होता है वह ईश्वर की गतिविधि का अनुप्रयोग है क्योंकि यह स्वर्ग के नीचे है। लेकिन मैं आपको सुझाव दूंगा कि यदि समय या समय पर कविता के बारे में हमारी समझ यह है कि यह इस दुनिया में एक बुद्धिमान व्यक्ति द्वारा लागू समय की उपयुक्तता से निपट रहा है, तो वास्तव में यह स्वर्ग के तहत वाक्यांशविज्ञान एक प्रकार से अलग कुछ भी नहीं है सूर्य के नीचे का परिप्रेक्ष्य जिसे हम आमतौर पर एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में देखते हैं। लेकिन वास्तव में इस बिंदु पर पहुंचने के लिए कि सूर्य के नीचे और स्वर्ग के नीचे रहने वाले जीवन के बीच कोई विशिष्ट या धार्मिक अंतर नहीं है, अध्याय 2 और श्लोक 3 पर एक नज़र डालें। अध्याय 2 और श्लोक 3, फिर से एक्लेसिएस्टेस के आत्मकथात्मक कथन का हिस्सा, मैंने कोशिश की, यह कोहेलेट ने कोशिश की है, शराब के साथ खुद को खुश करना और मूर्खता को गले लगाना।

मेरा दिमाग अभी भी मुझे ज्ञान के साथ मार्गदर्शन कर रहा है, निश्चित रूप से थोड़ा विरोधाभास है लेकिन हम उस पर बाद में विचार करेंगे। मैं यह देखना चाहता था कि अपने जीवन के कुछ दिनों के दौरान मनुष्यों के लिए स्वर्ग के नीचे क्या करना उचित है। फिर, अगर गतिविधि पर सूर्य के नीचे के परिप्रेक्ष्य से कुछ विशिष्ट है जिसे हम एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में कहीं और देखते हैं, तो पुरुषों के लिए भारी मात्रा में करने योग्य गतिविधि के संदर्भ में इस वाक्यांश के उपयोग से इसे नकार दिया जाएगा। दिन, उनके जीवन के क्षणभंगुर दिन।

तो फिर, परिप्रेक्ष्य की बात, कोहेलेट ने ज्ञान के लेंस के माध्यम से लेकिन सूर्य के नीचे के परिप्रेक्ष्य से हेवेल की दुविधा का समाधान खोजने के लिए अपनी यात्रा शुरू की है। यह बस एक क्षैतिज परिप्रेक्ष्य है, यह कोई भटका हुआ परिप्रेक्ष्य नहीं है, यह कोई सांसारिक परिप्रेक्ष्य नहीं है, और वह इस यात्रा को करते हुए कोई मूर्तिपूजक नहीं है। अब बुद्धि के मुद्दे पर।

एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में बुद्धि मूल भाव की भूमिका निभाती है, लेकिन यह परिप्रेक्ष्य का विषय भी लेती है। और जैसा कि मैंने अपने परिचय में उल्लेख किया है, ज्ञान भी वह शैली है जिसके द्वारा हम एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक पर अध्ययन लागू करेंगे। दूसरे शब्दों में, यह ज्ञान साहित्य है और इसलिए जब हम सभोपदेशक की पुस्तक का अध्ययन करते हैं तो हम ज्ञान साहित्य में अध्ययन के लिए उपयुक्त संलग्नता के नियमों का उपयोग करने जा रहे हैं।

लेकिन पहले इसे एक परिप्रेक्ष्य के रूप में निपटाएं। क्या हमारे कोहेलेट ने किसी प्रकार के गुप्त, सुखवादी दृष्टिकोण के माध्यम से अपनी खोज शुरू की थी या क्या वह वास्तव में ज्ञान के लेंस के माध्यम से देख रहा था क्योंकि वह गतिविधि और प्रतिबिंब के माध्यम से उन सभी चीजों की खोज करता है जो हम एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में देखते हैं? मैं आपको सुझाव दूंगा कि पाठ स्वयं पुष्टि करता है कि खोज, यात्रा ज्ञान के माध्यम से की जाती है।

इसके कुछ उदाहरणों पर एक नजर डालने के लिए, हमने यहां आत्मकथा खंड की शुरुआत से कुछ मिनट पहले ही अध्याय 1 और श्लोक 12 में पढ़ा था। मैं कोहेलेट इस्राएल और यरूशलेम पर राजा था। मैंने स्वयं को अध्ययन करने और स्वर्ग के नीचे जो कुछ भी किया जाता है, उसका बुद्धि द्वारा पता लगाने के लिए समर्पित कर दिया।

यहां बस कुछ पंक्तियों को नीचे स्कॉल करने पर, आप श्लोक 16 में उसी प्रकार की शब्दावली देख सकते हैं। मैंने मन में सोचा, देखो, मैं उन सभी से अधिक बुद्धिमान हो गया हूं जिन्होंने मुझसे पहले यरूशलेम पर शासन किया है। मैंने बहुत सारी बुद्धिमत्ता और ज्ञान का अनुभव किया है।

और फिर श्लोक 17 में, मैंने स्वयं को ज्ञान की समझ पर लागू किया। और इसलिए हम यहां एक्लेसिएस्टेस में जो पाते हैं वह यह है कि कोहेलेट का लक्ष्य बुद्धिमान होना है। उन्होंने अपनी यात्रा भी ज्ञान से शुरू की, लेकिन अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उन्होंने खुद को ज्ञान के माध्यम से भी लागू किया।

लेकिन साथ ही, हम यहां पाते हैं कि वह यह भी खोजना चाहते हैं कि क्या कोई समाधान है, कुछ ऐसा जिसे वह इस यात्रा में सामने लाने की क्षमता रखते हों। इसलिए, वह पागलपन और मूर्खता में भी संभावना तलाशता है। और मैंने सीखा कि यह भी हवा का पीछा करना है।

फिर, हमने इसे अपने दूसरे व्याख्यान में हेवेल वाक्यांश के एक साथी में देखा। अन्य छंद जो पूरे कोहेलेट की बुद्धिमत्ता की पुष्टि करते प्रतीत होते हैं, अध्याय 2 के श्लोक 3 में, मैंने खुद को शराब से खुश करने और मूर्खता को गले लगाने की कोशिश की, मेरा दिमाग अभी भी मुझे ज्ञान के साथ मार्गदर्शन कर रहा है। और फिर यदि आप उन सभी चीजों की आत्मकथात्मक गवाही के बाद थोड़ा नीचे स्कॉल करते हैं जो वह एकत्र करने और हासिल करने में सक्षम था और उन सभी

चीजों की उपयोगिता जो उसके पास थी क्योंकि वह उन्हें हमारे यिट्रोन की खोज में लागू करने में सक्षम था, हमारा लाभ, हमारा अधिशेष, हमारा लाभ।

पद 9 में वह कहता है, मैं अपने से पहिले यरूशलेम में जितने भी थे उन से कहीं अधिक महान हो गया। इस सब में मेरी बुद्धि मेरे साथ रही। मेरा अभिप्राय बस इतना ही है, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में कहीं भी हमें कोहेलेट को यह कहते हुए नहीं पाया गया है कि वह खोज को खोजने के लिए यात्रा करने के लिए, या यिट्रोन की चीज़ को खोजने के लिए, इस चीज़ को खोजने के लिए पूरी तरह से सुसज्जित और बुद्धिमान है। वह जीवन की गिरी हुई परिस्थितियों की दुविधा का समाधान है।

वस्तुतः, पुस्तक के अंत में उपसंहार में, आपको कोहेलेट की बुद्धिमत्ता की वही पुष्टि मिलती है। अध्याय 12 और श्लोक 9 में बताया गया है कि शिक्षक न केवल बुद्धिमान था, बल्कि वह लोगों को ज्ञान भी देता था। इसलिए, उसने ज्ञान इकट्ठा किया, लेकिन उसने ज्ञान भी सिखाया।

श्लोक 10 में शिक्षक के शब्द सच्चे और सच्चे हैं। तो, पाठ स्वयं भाषा में, शब्दों में, अवधारणाओं में सटीकता और ज्ञान की गवाही देता है जो एक्लेसिएस्टेस की पूरी किताब में बताए गए हैं। लेकिन यह सिर्फ परिप्रेक्ष्य की बात नहीं है।

ऐसा नहीं है कि कोहेलेट बुद्धिमान आंखों के माध्यम से यात्रा करता है और ज्ञान के लेंस के माध्यम से इन चीजों की खोज करता है। वह ज्ञान के मूल्य का पता लगाता है। दूसरे शब्दों में, वह यह पता लगाने जा रहा है कि क्या ज्ञान स्वयं हेवेल की दुविधा का समाधान प्रदान करने के लिए कुछ लाता है।

क्या बुद्धि वह यिट्रोन प्रदान कर सकती है जिसकी उसे तलाश है? वास्तव में, हम एक्लेसिएस्टेस में जो पाते हैं वह यह है कि कोहेलेट के ज्ञान के आकलन में कुछ तनाव है। वह पाता है कि बुद्धि बहुत लाभदायक है। यह अच्छा है, यह अच्छा है।

और यह इस दुनिया में एक फायदा प्रदान करता है। मूर्ख बनने से बुद्धिमान बनना बेहतर है। लेकिन हम यह भी पाते हैं कि अंततः हेवेल की समस्या का समाधान लाने में बुद्धि की क्षमता सीमित है।

वह यह जानने जा रहा है कि मूर्ख की तरह बुद्धिमान व्यक्ति भी मृत्यु के अधीन है। वह यह जानने जा रहा है कि बुद्धिमान व्यक्ति भी पृथ्वी पर भगवान की गतिविधि के कुछ रहस्यों के उतना ही अधीन है जितना कि मूर्ख। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, कोहेलेट ने हेवेल के कई निर्णयों का उल्लेख किया है।

उदाहरण के लिए, धर्मी को वह मिल रहा है जिसके दुष्ट लोग हकदार हैं और दुष्टों को वह मिल रहा है जिसके लायक धर्मी हैं। यह निश्चित रूप से ऐसा प्रतीत होता है कि यह ईश्वर द्वारा शासित विश्व के लिए हम जो अपेक्षा करेंगे उसके अनुरूप नहीं है। और फिर भी कभी-कभी आप पाते हैं कि जिन चीजों की मूर्ख से अपेक्षा की जाती है वे बुद्धिमानों के साथ घटित हो जाती हैं।

एक व्यक्ति दुनिया के सभी सही निर्णय ले सकता है। वे सही चुनाव कर सकते हैं। वे अपना दांव हेज कर सकते हैं।

वे वह सब कुछ कर सकते हैं जो उचित लगे। यहां तक कि उनका समय भी सही है और फिर भी कुछ अप्रत्याशित त्रासदी, कुछ अप्रत्याशित घटना घटती है और सब कुछ गड़बड़ हो जाता है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य, बुद्धि के प्रयोग से भी, अमुक प्रयास के परिणाम की गारंटी देने के लिए कुछ नहीं कर सकता।

और हमारे बुद्धिमान व्यक्ति, कोहेलेट का मानना है कि ज्ञान, हालांकि यह अच्छा है, हालांकि यह निश्चित रूप से लाभ प्रदान करता है, अंततः यह गारंटी प्रदान नहीं करता है। हम नीतिवचन की पुस्तक में उस प्रकार का सिद्धांत देखते हैं। यदि आप नीतिवचन की पुस्तक में पाए गए उपदेशों को वास्तव में जीवन में लागू करते हैं और ऐसा लगातार करते हैं, तो उम्मीद यह होगी कि आपका जीवन तब बहुत बेहतर हो जाएगा।

और फिर भी हम सभी जानते हैं कि मुझे जो उदाहरण देना अच्छा लगता है वह एक ऐसा व्यक्ति है जो फिट है, जो शारीरिक फिटनेस का प्रयास करता है, जो अपने शरीर को प्रशिक्षित करने के लिए चीजें करता है, वे सही खाते हैं, वे व्यायाम करते हैं, वे वह सब कुछ करते हैं जो लंबे समय तक स्वस्थ रहने के लिए उचित है जिंदगी। और फिर भी हम सभी जानते हैं कि कभी-कभी ऐसी चीजें होती हैं जो मैराथन धावक को तस्वीर से बाहर कर देती हैं। वे एक कार से कुचले जाते हैं, है ना? या शायद हम किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसे कैंसर का पता चला है, भले ही वह उस तरह का व्यक्ति हो जो सही खान-पान कर रहा हो, सही तरीके से खा रहा हो, व्यायाम कर रहा हो और लंबा और स्वस्थ जीवन जीने के लिए सभी चीजें सही कर रहा हो।

और फिर भी, मुझे लगता है कि कोहेलेट कहेगा, मैं एक आदमी को जानता हूँ, मैं एक महिला को जानता हूँ जिसने इतना अच्छा खाना खाया, उन्होंने व्यायाम किया, उन्होंने सब कुछ ठीक किया, और फिर भी वे जमीन से कटे हुए थे कैंसर से, लेकिन आपके लिए बेहतर होगा कि आप सही खान-पान करें और व्यायाम करें और हर दिन डोनट्स न खाएं और सोफे पर न बैठें और केवल पुनः दौड़ देखें। सक्रिय रहना बेहतर है। दूसरे शब्दों में, बुद्धि हमें बताती है कि संभावित परिणाम क्या है।

यह भविष्य की गारंटी नहीं देता। कोहेलेट इस तथ्य से काफी परेशान हैं कि ज्ञान भविष्य की गारंटी नहीं दे सकता। ज्ञान के संबंध में एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में कोहेलेट द्वारा लाए गए कई प्रतिबिंबों के मूल में यही है।

फिर भी, वह ज्ञान के मूल्य, जीवन में सही चुनाव करने के मूल्य की पुष्टि करता है। बस नकारात्मक और सकारात्मक, दोनों पक्षों की बुद्धिमत्ता के कुछ उदाहरणों पर एक नज़र डालें। अध्याय 2 और श्लोक 14 से 16 इसकी कुछ झलकियाँ प्रदान करते हैं।

अध्याय 2 और श्लोक, वास्तव में हम आगे बढ़ सकते हैं और श्लोक 12 से शुरू कर सकते हैं। फिर मैंने अपने विचारों को ज्ञान और पागलपन और मूर्खता पर विचार करने के लिए बदल दिया।

राजा का उत्तराधिकारी इससे अधिक और क्या कर सकता है जो पहले ही किया जा चुका है? मैंने देखा कि बुद्धि मूर्खता से बेहतर है, जैसे प्रकाश अंधेरे से बेहतर है।

बुद्धिमान व्यक्ति के सिर में आँखें होती हैं, जबकि मूर्ख अंधकार में चलता है। लेकिन मुझे एहसास हुआ कि उन दोनों का भाग्य एक जैसा ही है। दूसरे शब्दों में, मृत्यु सभी चीज़ों को समतल करने वाली है।

अमीर और गरीब, बुद्धिमान और मूर्ख, सभी को मरना होगा। तब मैंने मन में सोचा, इस मूर्ख का भाग्य मुझ पर भी पड़ेगा। तो कोहेलेट, जो अपने से पहले गए सभी लोगों से अधिक बुद्धिमान हो गया है, उसे एहसास होता है कि उसे भी मरना होगा।

तो फिर बुद्धिमान होने से मुझे क्या हासिल होगा? मैंने मन में कहा, यह भी नर्क है, शायद पीछा करने की व्यर्थता की ओर इशारा कर रहा है। दूसरे शब्दों में, बुद्धि स्वयं अंततः कोई स्थायी समाधान प्रदान करने में असमर्थ है। क्योंकि बुद्धिमान मनुष्य मूर्ख के समान अधिक समय तक स्मरण न किया जाएगा।

आने वाले दिनों में दोनों को भुला दिया जाएगा। मूर्ख की तरह बुद्धिमान व्यक्ति को भी मरना होगा। फिर भी सभोपदेशक की पुस्तक में अन्य स्थानों पर, हम पाते हैं कि ज्ञान की पुष्टि की गई है, ज्ञान के मूल्य की पुष्टि की गई है।

उदाहरण के लिए, अध्याय 4 और श्लोक 13 से 16 पर एक नज़र डालें। एक बूढ़े लेकिन मूर्ख राजा की तुलना में एक गरीब लेकिन बुद्धिमान युवा बेहतर है जो अब नहीं जानता कि चेतावनी कैसे लेनी है। हो सकता है कि वह युवक जेल से राजशाही में आया हो, क्योंकि हो सकता है कि उसका जन्म उसके राज्य में गरीबी में हुआ हो।

मैंने देखा कि सूर्य के नीचे रहने वाले और चलने वाले सभी लोग राजा के उत्तराधिकारी, युवक का अनुसरण करते थे। उनसे पहले जितने भी लोग थे उनका तो कोई अंत नहीं था लेकिन जो लोग बाद में आये वे उत्तराधिकारी से खुश नहीं थे। यह भी नर्क है, हवा का पीछा करना।

इसलिए, बुद्धिमान युवा उस दुनिया में उन्नति हासिल करने में सक्षम था जिस पर कोहेलेट विचार करता है, लेकिन अंततः उस युवा की बुद्धि ने किसी भी प्रकार का स्थायी समाधान प्रदान नहीं किया। मुनाफ़ा तो था, लेकिन उस तरह का ज़बरदस्त समाधान नहीं, यिट्रोन का वह विचार जिसे कोहेलेट खोज रहा था। आपको वास्तव में एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में कई कहावतें मिलेंगी जो संभाव्य परिणामों पर प्रतिबिंबित करती हैं, ऐसी चीज़ें जो वर्तमान अर्थ में या वर्तमान युग में ज्ञान के अनुप्रयोग के लिए लाभ प्रदान करेंगी।

उदाहरण के लिए, मुझे अध्याय 11 की कुछ कहावतें बहुत पसंद हैं। और मैंने इनमें से कुछ को हमारे परिचय में पढ़ा है। अध्याय 11 का पद 1, अपनी रोटी जल पर डाल दे, क्योंकि बहुत दिन के बाद तू उसे फिर पाएगा।

दूसरे शब्दों में, आपको वहां से बाहर निकलना होगा और कभी-कभी जीवन में, निवेश में, और जीवन के किसी भी लक्ष्य में जोखिम उठाना होगा, जिसके लिए आप इस तरह के ज्ञान को लागू करेंगे। सात को क्या आठ को भाग दे, क्योंकि तू नहीं जानता कि देश पर कैसी विपत्ति आ पड़ेगी। दूसरे शब्दों में, अपना दांव सुरक्षित रखें।

ज़रूरी नहीं कि हर चीज़ सफल हो, लेकिन आप भविष्य नहीं जानते। आप नहीं जानते कि किस तरह की चीज़ें सफल हो सकती हैं और किस तरह की चीज़ें लड़खड़ा सकती हैं। इसलिए, जीवन में, जब आप उन अवसरों का लाभ उठाते हैं जो भगवान आपको दे सकते हैं, तो आपको खुद को कई कार्यों में लगाना पड़ सकता है।

जैसा कि आधुनिक कहावत सुझाती है, अपने सभी अंडे एक टोकरी में न रखें। यदि बादल पानी से भरे हों तो वे धरती पर बरसते हैं। पेड़ चाहे दक्षिण में गिरे या उत्तर में, जिस स्थान पर गिरेगा, वहीं पड़ा रहेगा।

परिस्थितियाँ सही होने पर लाभ उठाने का विचार। वास्तव में, मुझे लगता है कि समय की कुछ उपयुक्तता सभोपदेशक के संपूर्ण ज्ञान में परिलक्षित होती है। और इसलिए, एक बुद्धिमान व्यक्ति जानता है कि कार्य करने का समय कब है और वह जानता है कि कब बचना है।

और इसलिए, भविष्य की गारंटी के बिना, व्यक्ति को अपने जीवन में होने वाली विभिन्न घटनाओं और विभिन्न अवसरों पर ऐसी बुद्धिमत्ता और समय का प्रयोग करना चाहिए। जो हवा को देखता है वह बो नहीं पाएगा, जो बादलों को देखता है वह काट नहीं पाएगा। दूसरे शब्दों में, यदि आप हमेशा उत्तम परिस्थितियों की प्रतीक्षा करते हैं, तो आपको जीवन में सफलता पाने का कोई अवसर कभी नहीं मिलेगा।

जब मैं उन स्थितियों के बारे में सोचता हूँ जिनका सामना मेरे कॉलेज के कई छात्र कर रहे होंगे। क्या उस लड़की से बाहर जाने के लिए पूछने का यह सही समय है? ठीक है, ऐसा हो सकता है कि यदि आप कभी उस लड़की से बाहर जाने के लिए नहीं पूछते हैं, या यदि आप कभी किसी लड़की से बाहर जाने के लिए नहीं पूछते हैं, तो आप शायद पाएंगे कि आप कभी डेट पर नहीं जा रहे हैं, आप पाएंगे कि आपने कभी शादी नहीं की है। दूसरी ओर, यदि आप हमेशा उस व्यक्ति को अस्वीकार कर देते हैं क्योंकि ऐसा लग सकता है कि यह बहुत जोखिम भरा है, तो आप शायद पाएंगे कि आप उस डेट पर कभी नहीं जाएंगे।

या यदि आप शायद किसी व्यावसायिक उद्यम में कदम रखने की बात कर रहे हैं। आप जानते हैं, यदि आप हमेशा सही समय के घटित होने या सही परिस्थितियों के घटित होने का इंतजार कर रहे हैं, तो आप पाएंगे कि वह समय कभी नहीं आता जब वे आदर्श परिस्थितियाँ सामने आती हैं। और आप पा सकते हैं कि आप उन विभिन्न उद्यमों में कभी आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं और कभी सफल नहीं हो रहे हैं या जीवन में सफलता नहीं पा रहे हैं।

और इसलिए, सभोपदेशक का ज्ञान बताता है कि जोखिम लेना महत्वपूर्ण है। यह संभाव्य ज्ञान का अनुप्रयोग है। कोहेलेट को एहसास होता है कि वह भविष्य की गारंटी देने में सक्षम नहीं है।

ऐसी चीजें हैं जो उसके नियंत्रण से बाहर हैं। यहां तक कि अपने से पहले आगे बढ़ने वाले सभी लोगों की तुलना में उनकी बुद्धि का विस्तार और विकास हुआ है। लेकिन वह यह भी मानते हैं कि एक ऐसे जीवन में जो अव्यवस्थित है, एक ऐसे जीवन में जो कठिन है, एक बुद्धिमान व्यक्ति फिर भी अपने दांव को टाल देगा और अपनी सर्वोत्तम क्षमता से आगे बढ़ेगा।

अध्याय 11 और श्लोक 5 इसी के साथ आगे बढ़ते हैं। जैसे तुम हवा का मार्ग नहीं जानते या माँ के गर्भ में शरीर कैसे बनता है, वैसे ही तुम सभी चीजों के निर्माता परमेश्वर के कार्य को नहीं समझ सकते। दूसरे शब्दों में, एक बुद्धिमान व्यक्ति कभी भी ईश्वर से ऊपर नहीं जाएगा।

वह कभी भी यह पता लगाने में सक्षम नहीं हो पाएगा कि भगवान अपने समय में चीजें क्यों करता है। वह कभी भी भविष्य को इतनी क्षमता से, इस तरह से समझने में सक्षम नहीं हो पाएगा कि वह हर समय सभी सही निर्णय लेने में सक्षम हो सके। वास्तव में, मुझे लगता है कि एक्लेसिएस्टेस की किताब यह सुझाव देगी कि यदि कोई व्यक्ति ऐसा करने में सक्षम हो, तो वह कुछ ही हफ्तों में अरबपति बन सकता है।

क्यों? क्योंकि वे सही स्टॉक चुन सकते थे। वे कम समय में लाखों और यहां तक कि अरबों कमाने में सक्षम होने के लिए सही प्रकार का निवेश चुन सकते हैं। लेकिन लब्बोलुआब यह है कि सबसे बुद्धिमान स्टॉक चुनने वाला, यहां तक कि सबसे बुद्धिमान व्यापार पूंजीपति, यहां तक कि सबसे बुद्धिमान व्यक्ति जो जीवन में सबसे बड़ा जोखिम लेता है, वे अभी भी भविष्य नहीं जानते हैं।

इसलिए, वे बस दांव से बच रहे हैं, अपनी सर्वश्रेष्ठ क्षमता से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन वे कभी भी भगवान से आगे नहीं निकल पाएंगे। और इसलिए जोखिम लेने पर अध्याय 11 में इनमें से कुछ नीतिवचन श्लोक 6 के साथ समाप्त होते हैं। सुबह को अपना बीज बोओ, और शाम को अपने हाथ बेकार मत रखो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि क्या सफल होगा। चाहे यह हो या वह, या दोनों समान रूप से अच्छा करेंगे।

फिर, एक बुद्धिमान व्यक्ति को यह पहचानना चाहिए कि हम संभाव्य परिणामों की तलाश में हैं। मैं इसे संभावित संभावनाएँ कहना पसंद करता हूँ। दूसरे शब्दों में, कोहेलेट मानते हैं कि सभी चीजें अंततः ईश्वर के हाथ में हैं, जिसमें ज्ञान का प्रयोग भी शामिल है।

दूसरे शब्दों में, आप सभी सही चुनाव करते हैं, लेकिन अंततः यह भगवान ही है जो परिणाम लाने वाला है। और इसलिए, हम इस मान्यता के माध्यम से आगे बढ़ते हैं कि सभी चीजें अंततः भगवान के हाथ में हैं, और फिर भी हम आगे बढ़ते हैं। ईश्वर की व्यवस्था के तहत संभावित संभावनाओं का अनुप्रयोग।

तो दूसरे शब्दों में, हम यहां जो पाते हैं वह यह है कि ज्ञान एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में एक प्रकार का रूप धारण करता है जहां कोहेलेट न केवल ज्ञान के लेंस के माध्यम से जीवन के मुद्दों की पड़ताल करता है, बल्कि यह भी पता लगाता है कि क्या ऐसा कुछ है जो ज्ञान सक्षम है या नहीं सबसे पहले नाइट्रोन प्राप्त करने के लिए मेज पर लाना, जीवन की गिरी हुई स्थिति की दुविधा का समाधान, लेकिन दूसरी बात यह पता लगाना कि ज्ञान इस पतित दुनिया में रहने वाले या जीवन

जीने वाले मनुष्य के लिए कोई अस्थायी लाभ या कुछ भी अच्छा प्रदान करता है या नहीं। और फिर अंत में, हम पाते हैं कि सभोपदेशक का अध्ययन ज्ञान साहित्य के रूप में किया जाता है। जैसा कि मैंने प्रस्तावना में उल्लेख किया है, हम एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के भीतर नीतिवचन, प्रतिबिंब भाषण ढूंढने जा रहे हैं, हम उस तरह की उदाहरण कहानियां ढूंढने जा रहे हैं जहां बुद्धिमान ऋषि एक तरह की कहानी के साथ कुशती करने जा रहे हैं और एक एक्सट्रपलेशन कर रहे हैं पाठ, उस कहानी से एक ज्ञान-आधारित सिद्धांत या उपदेश।

और इसलिए, इस सब को ध्यान में रखते हुए, एक पाठक के रूप में हमें यह समझने की आवश्यकता है कि जिस तरह से हम एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक को देखते हैं, उसे ध्यान में रखना होगा कि यह पुराने नियम के ज्ञान कोष के एक भाग के रूप में क्या है। दूसरे शब्दों में, एक्लेसिएस्टेस में, हम इसे एक कथात्मक पाठ के रूप में नहीं पढ़ने जा रहे हैं, हम इसे एक भविष्यवाणी पाठ के रूप में नहीं पढ़ने जा रहे हैं, हम यह नहीं देखने जा रहे हैं कि प्रभु ने इस पुस्तक में क्या कहा है सभोपदेशक, और इसलिए हमें सूर्य के नीचे उस क्षैतिज परिप्रेक्ष्य से कोई समस्या नहीं होने वाली है। हम किसी प्रकार के भविष्यसूचक दैवज्ञ को खोजने की उम्मीद नहीं कर रहे हैं जहाँ ईश्वर आवश्यक रूप से भविष्य या उसके जैसी किसी चीज़ की घोषणा करता है।

यह बिल्कुल उस तरह से नहीं है जिस तरह से एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक को डिज़ाइन किया गया है। यह इस बात का हिस्सा नहीं है कि ईश्वर इस पुस्तक के माध्यम से अपने धर्मग्रंथ में क्या कर रहा है। हम यह भी पाते हैं कि एक्लेसिएस्टेस में, कुछ व्याख्यात्मक दिशानिर्देश जिनका हम पालन करते हैं, उदाहरण के लिए, पाठों के व्यावहारिक पक्ष की तलाश में, बहुत, बहुत महत्वपूर्ण, बहुत मूल्यवान हैं।

दूसरे शब्दों में, नीतिवचन की पुस्तक की तरह, जो पुराने नियम का सर्वोत्कृष्ट ज्ञान साहित्य है, हम भी सभोपदेशक की पुस्तक में उन सिद्धांतों की अपेक्षा करते हैं जिन्हें जीवन के व्यावहारिक पक्ष पर लागू किया जा सकता है। और इसलिए अध्याय 11 और श्लोक 1 से 6 तक पढ़ने में भी, हमने इसके कुछ उदाहरण देखे। आइए मैं आपको अध्याय 7 और अध्याय 10 में कुछ और उदाहरणों पर ले चलता हूँ।

शायद हम अध्याय 10 और छंद 8 से 10 से शुरू कर सकते हैं। मैं एनआईवी से पढ़ रहा हूँ। सभोपदेशक अध्याय 10 की आयत 8 में लिखा है, जो कोई गड्ढा खोदेगा वह उसमें गिर सकता है।

जो कोई दीवार तोड़ेगा उसे साँप डस सकता है। जो कोई पत्थर खोदेगा वह उससे घायल हो सकता है। जो कोई लकड़ियाँ तोड़ता है, वह उनसे खतरे में पड़ सकता है।

और इसलिए, पाठक इसे पढ़ता है और मन ही मन सोचता है, यह दुनिया में किस बारे में बात कर रहा है? मेरा मतलब है, क्या कोहेलेट वास्तव में गड्ढों और साँपों और पत्थरों और लकड़ियों के बारे में इतना चिंतित है? या फिर इसके पीछे सचमुच कोई ज्ञान आधारित सीख है? मैं सुझाव दूंगा कि न्यू लिविंग ट्रांसलेशन का व्याख्यात्मक अनुवाद वास्तव में यहां काफी उपयुक्त है। अब, मैं अपने सामने एनएलटी का 1996 संस्करण रख रहा हूँ, और तब से इसे बदला और संशोधित किया गया है। लेकिन 96 संस्करण में, मुझे लगता है कि यह देखना कुछ हद तक जानकारीपूर्ण

है कि वे श्लोक 8 और 9 का अनुवाद कैसे करते हैं। जब आप एक कुआँ खोदते हैं, तो आप उसमें गिर सकते हैं।

जब आप कोई पुरानी दीवार गिराते हैं, तो आपको साँप काट सकता है। जब आप खदान में काम करते हैं, तो पत्थर गिरकर आपको कुचल सकते हैं। जब आप लकड़ी काटते हैं, तो आपकी कुल्हाड़ी के हर वार के साथ एक खतरा होता है।

और फिर ये लाइन, ऐसे हैं जिंदगी के खतरे. वह वास्तव में हिब्रू पाठ में नहीं है। यह वास्तव में बहुत व्याख्यात्मक है।

लेकिन मुझे लगता है कि यह वास्तव में यहां निशाने पर है। मुझे लगता है कि मुद्दा यह है कि जीवन में कुछ भी हासिल करने के लिए आपको जोखिम उठाना होगा। वास्तव में, इसका पालन करने से न केवल जीवन में जोखिम लेने के बारे में उपदेश मिलता है, बल्कि वास्तव में उन जोखिमों को लेने में सफलता भी मिलती है।

श्लोक 10 में लिखा है, चूंकि कुंद कुल्हाड़ी के लिए बहुत ताकत की आवश्यकता होती है, इसलिए ब्लेड को तेज करो। दूसरे शब्दों में, यह केवल जोखिम लेने का मामला नहीं है। यह सिर्फ कुल्हाड़ी घुमाने की बात नहीं है।

यह सिर्फ कड़ी मेहनत करने और जोखिम लेने का मामला नहीं है, बल्कि स्मार्ट तरीके से काम करने और जोखिम लेने का भी मामला है। उसमें आपको सफलता मिलेगी। वास्तव में, यहाँ पाठ, फिर से, एक व्याख्यात्मक अनुवाद है, जिसमें लिखा है, यही ज्ञान का मूल्य है।

यह आपको सफल होने में मदद करता है। तो, किसी भी मामले में, हम पाते हैं कि सभोपदेशक की पुस्तक में, इस प्रकार के व्यावहारिक ज्ञान उपदेश पूरी पुस्तक में बिखरे हुए हैं। मेरे पसंदीदा में से एक और जिसकी व्याख्या कुछ लोगों द्वारा सुखवादी दर्शन या विश्वदृष्टि पर एक प्रकार के प्रतिबिंब के रूप में की जा सकती है, लेकिन मैं उससे असहमत हूँ, एक्लेसिएस्टेस अध्याय 10 और श्लोक 19 है, जिसमें लिखा है, एक दावत हंसी के लिए बनाई गई है, और शराब जीवन को आनंदमय बनाती है।

लेकिन पैसा हर चीज़ का जवाब है। और इसलिए, आप इसे पढ़ते हैं और आप खुद सोचते हैं, खैर, यह मैथ्यू की किताब में भगवान और पैसे से प्यार न करने के साथ कैसे मेल खाता है? या यह 1 तीमुथियुस अध्याय 6 से कैसे मेल खाता है और पैसा सभी प्रकार की बुराई की जड़ है? मेरा मतलब है, पवित्रशास्त्र अन्यत्र धन के बारे में जो कहता है, उसके बारे में हम जो जानते हैं, यह उससे बिल्कुल मेल नहीं खाता है। लेकिन जब आप इसके बारे में सोचते हैं, उदाहरण के लिए, लोकप्रिय शिक्षण में, डेव रैमसे या उसके जैसे कुछ अन्य लोगों द्वारा आपको जिस तरह की शिक्षा से अवगत कराया गया है, वह कैसे निवेश करना है और कैसे बचत करना है, इस पर व्यावहारिक सबक सिखाते हैं। सेवानिवृत्ति और कर्ज से कैसे बाहर निकलें और इस प्रकार की चीज़ें करें, उन चीज़ों में से एक जो आप इन वित्तीय शिक्षकों को करते हुए पाएंगे, वह है लोगों को

उस लौकिक बरसात के दिन के लिए, उस समय के लिए हमेशा थोड़ा सा पैसा बचाने के लिए प्रोत्साहित करना। जब किसी आपातकालीन स्थिति के कारण आपको इसकी आवश्यकता हो।

आपने इनके बारे में आपातकालीन निधि के रूप में कुछ बातें भी सुनी हैं। और वे आपको बताएंगे, स्टॉक में अपना आपातकालीन फंड न रखें। घरों में अपना आपातकालीन कोष न रखें।

अपने आपातकालीन फंड को इस तरह से बांध कर न रखें कि आप उस तक पहुंच न सकें। क्यों? क्योंकि यदि यह तरल नहीं है, यदि यह सुलभ नहीं है, तो ज़रूरत के समय यह वास्तव में आपके लिए उपयोगी नहीं है। ऐसा लगता है जैसे कोहेलेट ने हमें पैसे से संबंधित उसी तरह का ज्ञान दिया है।

जरूरत के समय पैसे में जबरदस्त लचीलापन होता है। हंसी-मजाक के लिए दावत बनाई जाती है। कुछ अर्थों में यह अच्छा है, लेकिन इसकी उपयोगिता का दायरा सीमित है।

और शराब जीवन को आनंदमय बनाती है, लेकिन पैसा हर चीज़ का उत्तर है। दूसरे शब्दों में, पैसा उपयोगकर्ता के लिए लाभदायक होने का एक बहुत ही लचीला तरीका है। अब यदि आप इसे व्यावहारिक दृष्टि से देखें, और आप कोहेलेट को इस संदेह का लाभ देते हैं कि वह एक बुद्धिमान व्यक्ति है जैसा कि वह कहता है, और आप इसे बस एक ज्ञान उपदेश के रूप में देखते हैं कि कैसे एक खुशहाल दुनिया में जीवन को नेविगेट करने के लिए, आप पाएंगे कि इस कहावत को अंकित मूल्य पर लेने में बहुत लाभ है।

और मैं आपको फिर से सुझाव दूंगा कि एक्लेसिएस्टेस का ज्ञान अनिश्चित दुनिया में जीवन पर लागू होता है। और इसलिए कोहेलेट देखता है कि ज्ञान अंततः समाधान प्रदान नहीं करेगा, लेकिन फिर भी यह अच्छा है। यह नश्वर और गिरी हुई दुनिया में जीवन को आगे बढ़ाने के लिए लाभ प्रदान करता है जहां कभी-कभी चीज़ें उम्मीद के मुताबिक नहीं होती हैं, लेकिन फिर भी, मनुष्य को उपहार दिया जाता है और वर्तमान का लाभ उठाने का अवसर दिया जाता है।

सभोपदेशक का ज्ञान वर्तमान का बेहतर लाभ उठाने का अवसर प्रदान करता है। ठीक है। अच्छा।